International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 974-976

स्त्री अधिकारिता और कबीर

पूनम रानी
शोधार्थी (पीएच. डी.), महर्षि दयानन्द विष्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

भारत में स्त्री अस्मिता, स्वत्व की रक्षा और अधिकारों से संबंध आन्दोलन की षुरूआत 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुई। उस समय न्याय, नैतिकता और परम्परा पर विचार किया गया, लेकिन उस समय देष स्वतंत्र न होने के कारण ये विचार दबकर रह गए। जब देष स्वतंत्र हुआ तब उसमें स्त्री मुक्ति का मुद्दा उठा, लेकिन तब यह मुद्दा स्पष्ट आकार ग्रहण न कर सका। जब स्त्रीवादी आन्दोलनों की षुरूआत हुई, तब जाकर वैचारिक स्तर पर स्त्री–मुक्ति की नई लहर उठी। महिला सषक्तिकरण इसी लहर की तार्किक परिणति है। आज के समय में स्त्री की स्वतंत्रता, समानता, शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी अधिकारों पर बल दिया जाने लगा है, लेकिन अगर ध्यान से देखा जाए तो इसकी जड़े अत्यंत प्राचीन है। भावना का क्षेत्र हो या बुद्धि का, स्त्री के सहयोग से पुरूष पूर्णता को प्राप्त हुआ है। स्त्री एवं पुरूष की समन्वय भावना के कारण सम्पूर्ण सृष्टि को गति एवं सौन्दर्य प्रदान होता है। भारतीय परम्परा एवं परिवेष में या तो स्त्री को देवी पद पर आसिन किया है या वासना की वस्तु समझा है। उसे मानवीय रूप कभी प्रदान नहीं किया। हमारा गौरवमय अतीत इस बात का साक्षी है कि वैदिक काल में नारी को कुल देवी का स्थान प्राप्त था। उसे शिक्षा का समान अधिकार प्राप्त था। 'ब्रह्म यक्ष' के वेत्ताओं में जिन ऋषियों की गणना की जाती है, उसमें गार्गी, मैत्रेयी, अनसूया, सुलभा आदि विदुषियों का नाम प्रसिद्ध है। लेकिन जैसे ही उतर वैदिक काल की षुरूआत हुई नारी की स्वतंत्रता व अधिकारों का हनन होने लगा। मध्यकाल आते–जाते उनकी स्थिति बद से बदतर होने लगी। पुरूषों ने उनके अधिकारों को छीन लिया, शिक्षा पर प्रतिबंध लगा दिए गए। पर्दे में रहने पर स्त्री को विवष किया गया। उसे केवल भोग की वस्तु समझा जाने लगा। स्त्रियों की यह दयनीय स्थिति मध्यकाल की भयावह तस्वीर पेष करती है। ऐसे ही परिवेष में कबीर का आविर्भाव हुआ। जिन्होंने सामाजिक बुराईयों के उन्मूलन में महत्त्वपूर्व भूमिका निभाई। इसलिए कुछ लोग उन्हें समाज–सुधारक की संज्ञा देते हैं, तो कुछ उन्हें विद्रोही क्रांतिकारी कवि कहते हैं। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो उनके नारी–विषयक दृष्टिकोण पर आपत्ति जताते हुए प्रष्न–चिह्न लगाते हैं और उन्हें स्त्री –विरोधी कवि मानते है। कबीर ने जहाँ एक तरफ सती या पवित्रता नारी को सम्मान की नजर से देखा है, तो वही दूसरी ओर मोक्ष प्राप्ति के मार्ग में स्त्री को बाधक भी माना है। उसकी घोर निन्दा की है। इसलिए कबीर आज के परिवेष में विवादस्पद बन गए है। इस सन्दर्भ में डॉ0 रामेष्वरनाथ मिश्र 'अनुरोध' ने लिखा है –''कबीर के प्रषंसकों द्वारा आज कबीर का जो रूप हमारे समक्ष खड़ा किया जाता है, वह है उनका क्रांतिकारी या विद्रोही रूप। उनके बारे में कहा जाता है कि वे एक संघर्षषील, प्रगतिवादी, समाज सुधारक संत थे। उन्होंने दलितों के लिए वर्णाभिमानियों तथा जाति–कुल–गोत्र को बड़ा मानने वालों से डटकर लोहा लिया है। वे अत्यन्त निर्भिक और दलितों के सबसे बड़े उद्धारक थे। उन्होंने सामाजिक बुराईयों पर करारा प्रहार किया। रूढ़ियों का पालन और परम्परा का अंधानुकरण न करके उन्होंने समाज में फैली विकृतियों की प्रभावशाली स्वर में विरोध किया।..... किन्तु कबीर का यह विद्रोही रूप उस समय टूटता या ढ़हता–सा प्रतीत होता है, जब वे नारी के समक्ष खड़ा होते हैं, या नारी उनके समक्ष खड़ी होती है।''[1]

उपयुर्क्त कथन के आधार पर अगर देखा जाए तो कबीर का नारी के प्रति दृष्टिकोण सामंती था। वे उसे माया, महाठगिनी, काली नागिन, विष–फल, नरक का कुंड आदि नामों से अभिहित करते है। इससे तो यही लगता है कि नारी के प्रति कबीर जैसा असंवेदनशील विचारक कोई भी नहीं है। यह निम्नलिखित उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है –

''माया महाठगिनी हम जानी।
केषव के कमला ह्वै बैठी, शिव के भवन भवानी।।
योगी के योगिन ह्वै बैठी, राजा के घर रानी।
भक्तां के भक्तिन ह्वै बैठी, ब्रह्मा के ब्रहमानी।।''[2]

इसमें कबीर ने लक्ष्मी, सरस्वती, जगदम्बा भवानी जैसी पूजनीय देवी–माताओं की भर्त्सना की है।

''नारी कुंड नरक का, बिरला थंभै बाग।
कोई साधूजन ऊबरै, सब जग मूंवा लाग।।''[3]

इन पंक्तियों में कबीर ने नारी को नरक के कुंड के समान बताया है।

कबीर नारी को एक ऐसा मानक मानते है, जिसके आधार पर उत्तम और अधम व्यक्ति की पहचान की जाती है। उनका मानना है कि 'जोरू' इस संसार की जूठन अतिरिक्त और कुछ नहीं है। जो भी व्यक्ति उसके निकट आ गया, वह व्यक्ति अधम है और जो उससे अलग रहे, वही उत्तम व्यक्ति है।

''जोरू जुठणि जगत की, भले बुरे का बीच।
उत्यम ते अलग रहै, निकटि रहै ते नीच।।''[4]

कबीर का मानना है कि जिस नारी की सिर्फ परछाई पड़ने से साँप जैसा विषधर जीव भी अंधा हो जाता है तो उस पुरूष की क्या हालत होती होगी जो हर क्षण उसके साथ रहता है –

''नारी की झाई परत, अंधा होत भुजंग।
कबीरा तिन की कौन गति जे नित नारी संग।।''[5]

उपयुर्क्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि कबीर ने नारी को अत्यंत ही घृणित, समाज–षत्रु और ईष्वर प्राप्ति के मार्ग में बाधक माना है। क्या यह स्त्री जाति के प्रति अन्याय नही है। कबीर यदि अन्याय, शोषण, रूढ़ियों, अन्धविष्वासों, बाह्याडम्बरों के खिलाफ थे, तो उन्होंने स्त्री–जाति के ऊपर हो रहे अत्याचारों के विरूद्ध अपनी आवाज क्यों नही उठाई? स्त्री के अधिकारों के प्रति उन्होंने मौन धारण क्यों किया? इतना ही नहीं कबीर ने उस समय की एक अमानवीय प्रथा सती प्रथा का भी समर्थन किया।
चूँकि सती नारी कबीर को बेहद पसंद थी। उसके आत्मबलिदान की प्रषंसा करते हुए कबीर ने कहा है –

''सती बेचारी सत किया, काठौ सेज बिछाइ।
ले सूती पिव आपणां, चहुं दिसि अगनि लगाई।।''[6]

स्पष्ट है कि कबीर की स्त्री जाति के प्रति ऐसी सोच भारतीय समाज में मानवाधिकारों के नाम पर एक कलंक है। यदि कबीर आज होते तो निष्चित रूप से जेल में होते, ऐसा 'सती निवारक अधिनियम', 1987 की धारा 4 के तहत होता। जिस तरह से कबीर ने रूढ़िवादी, जातिवाद के विरोध में अपनी आवाज उठाई, उसी तरह अगर स्त्री समाज के लिए जेहाद छेड़ा होता, तो षायद कबीर सिर्फ संत या समाज सुधारक ही नहीं कहलाते, वे बुद्ध की तरह ' भगवान बुद्ध' बन गए होते।
हमारे देष में ऐसे अनेक महान ऋषि गृहस्थ–सन्यासी थे। वषिष्ठ, अगस्त, याज्ञवल्क्य, भृगु गृहस्थ सन्यासी थे। वे सब अपनी स्त्रियों का आदर –सम्मान करते थे। वे उन्हें भगवत–भक्ति, ईष्वर–साधना और अपनी तपष्चर्या में बाधा स्वरूप नहीं मानते थे। अरून्धती, मुद्रालोपा, अनसूइया, गार्गी, मैत्रेयी, अपाला आदि नारियाँ कबीर के जन्म से सहस्रों वर्ष पहले संत–महात्माओं और सामान्य पुरूषों द्वारा सम्मानीय थी। इन स्त्रियों की प्रषस्ति से ग्रंथ भरे है।
क्या कबीर के जीवन काल में नारी जाति इतनी भयंकर हो उठी कि उसके सामाजिक बहिष्कार के बिना भक्ति, मुक्ति और आत्मज्ञान को प्राप्त करना कठिन हो गया।
डॉ0 'अनुरोध' ने लिखा है कि ''भक्ति, मुक्ति, आत्मज्ञान या ईष्वर हेतू साधना केवल पुरूष वर्ग की बपौती नहीं है। अध्यात्म के क्षेत्र में अंडाल, सहजोबाई, दयाबाई, मीराबाई, मुक्ताबाई आदि नारी रत्नों के नाम अमर है। वेद–मंत्रों की रचना करने वाली कई ऋषिकाएँ हैं, जिनके अध्यात्म–ज्ञान का लोहा आज भी लोग मानते हैं।''[7]
उपयुर्क्त विवेचन कबीर का नारी के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को रेखांकित करता है। लेकिन ऐसा कतई नहीं है कि उनका दृष्टिकोण नारी के प्रति नकारात्मक रहा है, सकारात्मक दृष्टिकोण भी नारी के प्रति हमें देखने को मिलता है।
अगर कबीर का दृष्टिकोण कही–कही नारी के प्रति नकारात्मक रहा है तो कबीर का अवसान 600 साल पहले ही हो गया था, लेकिन 600 साल बाद और स्वंतत्रता प्राप्ति के 70 साल बाद भी स्त्री–जाति के प्रति पितृसत्तात्मक समाज का नजरिया क्यों नहीं बदला है। आज महिलाओं को चुनाव लड़ने के लिए क्यों डराया–धमकाया जाता है? दलित महिला सरपंच को झंडा फहराने से क्यों रोक दिया जाता है? टेनिस महिला खिलाड़ियों की छोटी स्कर्टो को लेकर सवालों को क्यों उठाया जाता है? क्यों आज भी पर्दा प्रथा प्रचलन में है? तो फिर कबीर पर इतने प्रत्यारोपण, प्रष्नों का वितंडावाद क्यों खड़ा किया जा रहा है। कबीर भी इन्सान थे, संत थे, कोई भगवान नहीं थे। शायद उस समय परिस्थितियां ही ऐसी रही होगी कि नारी को विभिन्न अपशब्दों से अभिलित किया गया हो और कबीर भी नारी विरोधी परम्पराओं का विरोध न कर पाए हो। आज तमाम तरह के कानून एवं दण्ड व्यवस्था होने के बावजूद भी बाल–विवाह, बलात्कार, कन्या भ्रूण हत्या, यौन–उत्पीडन आदि समस्या क्यों बढ़ रही है। स्त्री जाति की हिमाकत करने वाले इन समस्याओं को अपने काबू में क्यों नहीं कर पा रहे हैं। वे ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि यह उनके वष की बात नहीं है। सिर्फ कबीर पर आक्षेप लगना ही उनके वष में है क्योंकि उनकी सोच नकारात्मक है। मध्यकालीन सती प्रथा की बात करे तो नारी विवाहोपरान्त सती होती थी, जोकि तत्कालीन समाज के ऊपर कलंक माना जाता था, लेकिन आज जिस नारी की दुनिया देखने से पहले ही हत्या कर दी जाती, उसे क्या कहेंगे? फिर मध्यकालीन नारी और आज की नारी में वास्तविक सती कौन है? अतः हमें दूसरों की कमिया न गिनकर सुधार के उपायों पर ध्यान देना चाहिए।
डॉ0 सोहनराज तातेड़, डॉ0 इन्दु तिवारी ने लिखा है –'' कबीर ने अपने समाज को स्त्री–पुरूष दो रूपों में देखा था और दोनों में एक ही तत्त्व का उन्हें आभास हुआ। तात्त्विक दृष्टि से वे सबको एक समझते थे, पर वैचारिक दृष्टि से सब अलग थे। समाज में पति–पत्नी के पारस्परिक संबंध भी अच्छे नहीं थे। उनके चरित्र के संबंध में एक–दूसरे के प्रति अविश्वास पाया जाता है। इसलिए कबीर ने कामी नर और कामिनी (नारी) की निन्दा की है –

नर नारी सब नरक है जब लगि देह सकाम।।[8]

इससे स्पष्ट हो जाता है कि कबीर ने नारी की निंदा क्यों और किस वजह से की है। सामान्यतः समस्त संत कवियों ने नारी के कामिनी रूप की निंदा एवं भर्त्सना की है। फिर अकेले कबीर पर तरह–तरह का आरोप लगाना उनके प्रति अन्याय है।
वस्तुतः कबीर के काव्य में जिस नारी की प्रषंसा की गई है, वह प्रेमपरायण, कर्त्तव्यपरायण पतिव्रता नारी है। वे समस्त स्त्री जाति की निन्दा या विरोध नहीं करते है, बल्कि व्याभिचारिणी, ईर्ष्यालू, झगड़ालू, पतिव्रता का धर्म–निर्वाह न करने वाली नारी की निन्दा या विरोध करते है। यदि सम्पूर्ण स्त्री–समाज के प्रति उनका हीन दृष्टिकोण रहा होता तो वे कदापि पतिव्रता, सतीव्रता तथा माता के क्षमाषील व्यक्तित्व का चित्रण नहीं करते। उन्होंने हरि को जननी तथा खुद को बालक कहकर अपने आन्तरिक दोषों के निवारण के लिए क्षमा–याचना की है –

''हरि जननी में बालक तोरा, काहें न अवगुन बकसहु मोरा।।
सुत अपराध करै दिन केते, जननी कै चित रहै न तेते।।
कर गहि केस करै जो धाता, तऊ न हेतू उतारै माता।।
कहै कबीर एक बुधि विचारी, बालक दुखी–दुखी महतारी।।''[9]

वास्तव में कबीर की स्त्री अधिकारिता संबंधी दृष्टि को भक्ति के सन्दर्भ में ही देखा जा सकता है, सिर्फ 'देह और देहान्त' में बाँधकर देखना मानसिक विकृति का ही परिचायक होगा। कबीर ने कामिनी नारी की निन्दा इसलिए की है, ताकि वह अपने आचरण में षुद्धता लाए, सुधार लाए वरना सामाजिक रिष्ते छिन्न–भिन्न हो जाएँगे। यह भी सत्य है कि व्यक्ति सबसे ज्यादा उसी को डाँटता, फटकारता है, जिस पर अपना अधिकार समझता है और जिसे सबसे अधिक प्रेम करता है। बलदेव वंषी ने लिखा है – ''इतनी व्यापक संवेदना–दृष्टि सम्पन्न महापुरूष को नारी निन्दक के

अभियोग में घेरकर छोटा बनाने का प्रयास पितृसत्तात्मक छोटे लोगों का ही हो सकता है। अन्यथा कबीर की यह साखी ही पर्याप्त है–

''नारी जननी जगत की, पाल पोष दे तोष।
मूरख राम बिसार कर, ताहि लगावै दोष।।''[10]

सन्दर्भ

1. रामेश्वर नाथ मिश्र 'अनुरोध, सं. बलदेव वंषी, कबीर की नारी चेतना – आधार प्रकाषन –पृष्ठ 105
2. अयोध्या सिंह उपाध्याय, कबीर वचनावली, पद 42, पृष्ठ 189–190
3. सं. पुष्पपाल सिंह, कबीर ग्रंथावली सटीक – पृष्ठ 219
4. सं. डॉ0 युगेष्वर, कबीर समग्र पृष्ठ 286
5. अयोध्या सिंह उपाध्याय, कबीर वचनावली, पृष्ठ 141
6. वही पृष्ठ 119, दोहा 296
7. रामेश्वर नाथ मिश्र 'अनुरोध, सं. बलदेव वंषी, कबीर की नारी चेतना –पृष्ठ 110
8. डॉ0 सोहन राज तातेड़, डॉ0 इन्दु तिवारी, कबीर एवं आचार्य महाप्रज्ञ का समाज कल्याण दर्षन, पृष्ठ 262
9. सं. डॉ0 युगेष्वर, कबीर समग्र, पृष्ठ 567
10. स्पा. डॉ0 बलदेव वंषी, कबीर एक पुनर्मूल्यांकन, पृष्ठ 14